Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 12, (2017) 81-85

"भीमशतकम्" में विवेचित समाज

जे0के0 गोदियाल[1*] एवं अनामिका[1]

[1] संस्कृत विभाग हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, पौड़ी गढ़वाल–246001

*Corresponding Author Email:jaigod54@gmail.com

Received: 06.08.2017; Revised:11.09.2017; Accepted: 20.12.2017
©Society for Himalayan Action Research and Development

सारांश–: "भीमशतकम्"खण्डकाव्य है यह काव्य की स्वतत्रं विधा है । इसका अपना महत्व है । इसमें प्रतीको के प्रयोग के साथ ही पात्रो की भूमिका भी उल्लेखनीय रही है । डा0 अम्बेडकर का भारतीय समाज और साहित्य में अद्वितीय स्थान रहा है इस दृष्टिकोण से यह शोधपत्र स्वंय खण्डकाव्य है

कुंजी शब्द: शतकम् , भारतीयसाहित्य,सविधान एवं प्रतीक।

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोधपत्र में कविरत्न श्रीकृष्ण सेमवाल द्वारा रचित खण्डकाव्य भीमशतकम् में विवेचित समाज का वर्णन किया गया है।

ऋग्वेद से लेकर आज तक संस्कृत भाषा के माध्यम से सभी प्रकार के वाड्.मय का निर्माण होता आ रहा है। भारतीय संस्कृति और विचारधारा का माध्यम होकर भी यह भाषा अनेक दृष्टियों से धर्मनिरपेक्ष रही है। इस भाषा में धार्मिक, साहित्यिक, आध्यात्मिक दार्शनिक,वैज्ञानिक और मानविकी आदि प्रायः समस्त प्रकार के वाड्.मय की रचना हुई।

संस्कृत भाषा का साहित्य अनेक अमूल्य ग्रंथरत्नों का सागर है। इतना समृद्ध साहित्य किसी भी दूसरी प्राचीन भाषा का नहीं है और न ही किसी अन्य भाषा की परम्परा अविच्छिन्न प्रवाह के रूप में इतने दीर्घकाल तक रह पाई है। अति प्राचीन होने पर भी इस भाषा की सृजन शक्ति कुण्ठित नहीं हुई।

संस्कृत साहित्य सृजन की परम्परा गढ़वाल में भी प्राचीन काल से ही चली आ रही है। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए गढ़वाल हिमालय के आधुनिक कवि कविरत्न श्रीकृष्ण सेमवाल ने अनेक ग्रंथों की रचना करके संस्कृत साहित्य में अपना अमूल्य योगदान दिया है एवं वर्तमान में भी वे संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार व विकास के लिए प्रयासरत हैं।

संस्कृत काव्यधारा का क्रान्तिदर्शी कवि जातिवाद के संघर्ष से सदैव जूझता आया है। राजसत्ता प्रभुसत्तावाद तथा साम्प्रदायिक आग्रहों से जातिवाद पनपा है किन्तु संस्कृत कवि ने एक समाज सुधारक की दृष्टि से जाति–प्रथा की कड़ी आलोचना की है। कविरत्न श्रीकृष्ण सेमवाल ने भीमशतकम् जैसे नवीन खंडकाव्य की रचना करके इस बात की ओर संकेत किया है कि वे एक ऐसे कवि हैं जिनकी दृष्टि में एक कवि को समसामयिक युग समस्याओं के प्रति जागरूक रहकर काव्य रचना करनी चाहिए।

भीमशतकम् कृति डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के जीवन दर्शन पर आधारित है। भारतीय संविधान के निर्माता तथा राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के पक्षधर डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने अपना सम्पूर्ण जीवन दलित समाज के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। डॉ0 अम्बेडकर का जन्म अछूत मानी जाने वाली "महार" जाति में हुआ था इस कारण डॉ0 अम्बेडकर को बचपन से ही सामाजिक तिरस्कार, अस्पृश्यता, जातिगत भेदभाव व घृणा के कटु अनुभवों का सामना करना पडा जिससे वे बहुत दु:खी हुए इस विचार का विवेचन श्रीकृष्ण सेमवाल ने इस प्रकार किया है–

शालायां शिक्षकाणांच छात्राणामपि प्रत्यहम् ।

व्यवहारं कुत्सितं दृष्ट्वा त्रस्तो बालो मुहुर्मुहुः।।[1]

इस प्रकार सार्वजनिक स्थलों पर अछूत जाति के प्रति इस प्रकार का भेदभाव देखकर डॉ0 अम्बेडकर इस सामाजिक व्यवस्था पर सोच –विचार करते हैं। "भीमशतकम्" में इसका वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है–

वाप्यां कूपे गृहेष्वेवं मन्दिरेऽपि मठेऽपि वा।

भेदबुद्धिं विलोक्यात्र विचारः कृतवान्नसौ।।[2]

डॉ0 अम्बेडकर समाज में फैली इस जाति प्रथा को देखकर यह सोचने को विवश हो जाते हैं कि इस संसार में सभी मनुष्यों का बोलना, खाना, पीना, हॅसना ,रोना इत्यादि क्रियाएँ एक समान हैं फिर मनुष्य जाति में अस्पृश्यता की भावना क्यों है–

मानवाः मानवाः सर्वे समरक्ताः समक्रियाः ।

कथमस्पृश्यता तत्र किमाश्चर्यमतः परम्।।[3]

भारतीय समाज में समानता के सूत्रधार डॉ0 अम्बेडकर के जीवन का मुख्य उद्देश्य दलितों का उद्धार करना था। इसका वर्णन करते हुए"भीमशतकम्" में कवि ने लिखा है–

अध्यापनस्य कार्यन्तु गौणत्वेन स्वीकृतम्।

दलितोद्धारकं कार्य मुख्येनाङ्गीकृतं प्रियम्।।[4]

डा0 भीमराव अम्बेडकर अस्पृश्यता के दुःखों को झेलते हुए भी अपने कर्त्तव्य मार्ग से कभी भी विचलित नहीं होते हैं। हिन्दू समाज में व्याप्त जाति–प्रथा के कारण उनका अपमान किया गया। फिर भी उन्होंने धैर्य रखते हुए समाज से अस्पृश्यता का विनाश करने की प्रतिज्ञा की, इसका वर्णन करते हुए कवि ने "भीमशतकम्" में लिखा है–

अपमानस्य दुःखेन दग्धस्तप्तस्तपोधनः।

अस्पृश्यता विनाशार्थं दृढसंकल्पपरोऽभवत्।।[5]

भारतीय संविधान के निर्माता डॉ0 भीमराव अम्बेडकर समाज में व्याप्त विषमताओं को जानने के बावजूद भी संविधान का निर्माण निरपेक्ष भाव से करते हैं। और उस निर्माण में सम्पूर्ण राष्ट्र का कल्याण निहित रहा है। इसका वर्णन अधोलिखित श्लोक में द्रष्टव्य है–

हिन्दून्प्रति च विद्वेषे जातेऽपि मानसेऽनिशम्।

संविधानस्य निर्माणे विद्वेषो नोपलक्ष्यते।।[6]

डॉ0 अम्बेडकर सभी धर्मों को समान मानने वाले थे। इन्होंने सभी धर्मों का आदर किया। कतिपय हिन्दू वर्ग द्वारा समाज के अल्पसंख्यक वर्ग को पीड़ित किया जाता है। फिर भी इन्होंने इस बात का उल्लेख संविधान में नहीं किया जो इनकी महानता का परिचायक था। इस प्रकार संविधान का निर्माण उन्होंने सबको दृष्टि में रखकर किया।

डॉ0 अम्बेडकर ने संविधान में हिंदुओं को विभाजित करते हुए जैन, बौद्ध एवं सिक्खों को हिंदुओं का अभिन्न अंग बताया है। यह दृष्टि वर्तमान समय में सर्वथा विलुप्त कर दी गई है। जबकि वर्तमान भारतीय समाज के लिए अम्बेडकर का उक्त दृष्टिकोण नितान्त उपयोगी है। अम्बेडकर के उक्त समाजोपयोगी दृष्टिकोण का उल्लेख करते हुए कवि ने "भीमशतकम्" में लिखा है–

हिन्दूवर्गसमाख्यानं विधाने यत्र दृश्यते।

जैनाः बौद्वाश्च सिक्खाश्च सर्वे तत्र सुयोजिता।।[7]

सामाजिक विद्वेष के आक्रोश की पीड़ा से पीड़ित होते हुए भी डॉ0 भीमराव अम्बेडकर अपने अध्ययन कार्य में निरन्तर तल्लीन रहे क्योंकि वे मानते थे कि शिक्षा के द्वारा ही वे समाज से अस्पृश्यता को दूर कर सकते हैं। डॉ0 अम्बेडकर ने मुम्बई आकर उच्च शिक्षा प्रारम्भ की। लेकिन अर्थाभाव के कारण उनका शिक्षण कार्य रूक गया बड़ौदा के महाराजा के सहयोग से उनका शिक्षण कार्य पुनः आरम्भ हो गया इसका वर्णन करते हुए कवि ने भीमशतकम् में लिखा है–

अर्थाभावेन संरूद्धं शिक्षणं तत्क्षणंच यत्।

बड़ोदाराज्यसाह्येन पुनः प्रारम्भतां गतम्।।[8]

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर एक ऐसे महामानव थे जिन्होंने दलित जनों के कल्याण के लिए अपने सभी सुखों को त्याग दिया। दलितों को सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक स्वावलम्बन व राजनैतिक शक्ति प्रदान करने के लिए उन्होंने अपने सम्पूर्ण ज्ञान वैभव व जीवन की कुर्बानी दे डाली। दलितों के उत्थान कार्य में अध्यापन कार्य को बाधक समझकर उन्होंने अध्यापन कार्य से त्यागपत्र दे दिया। इसका वर्णन "भीमशतकम्"में वर्णित है–

दलिताराधने बाधां सम्वीक्ष्य तेन सत्वरम्।

शालायाः शिक्षणं त्यक्तं लाभप्रदमपि प्रियम्।।[9]

भीमशतकम् में कवि ने लिखा है कि डॉ0 अम्बेडकर ने एक वर्गरहित समाज का सपना देखा तथा उसे साकार करने के लिए आजीवन संघर्ष किया। उन्होंने समाज के कल्याण के लिए अनेक कार्य किए और अपना सर्वस्व समाज को समर्पित किया। सभी के सुख के लिए अनेक कष्टों का अनुभव किया–

अस्पृश्यताविनाशाय प्रयासाः विविधा कृताः।

उद्घाटितास्तु शिक्षार्थं शिक्षया आलयाः प्रियाः।।[10]

कवि समाज में फैली बुराइयों को दूर करना चाहता है। समाज में फैली बुराइयों के कारण कवि का मन दुःखी है। आज भी समाज में फैली भ्रष्टाचार, अत्याचार, बलात्कार, जनसंहार आदि निन्दित कार्य एवं धर्म व जाति के नाम पर परस्पर वाद–विवाद होते रहते हैं। कवि चाहता है कि समाज से ये बुराइयॉ दूर हों। कवि के अनुसार इस संसार में न तो कोई छोटा है न कोई बड़ा। सभी जाति के मनुष्य समान हैं। कविरत्न श्रीकृष्ण सेमवाल समाज में फैली जाति–प्रथा एवं अस्पृश्यता की बुराइयों को देखकर कितने व्यथित हैं। यह बात "भीमशतकम्" के अध्ययनोपरान्त स्पष्ट हो जाती है। कवि की दृष्टि में सभी मनुष्य एक ही ईश्वर ने बनाए हैं तो अस्पृश्यता कैसी–

गतिः समाना च मतिः समाना,

रति समाना च कृतिः समाना।

पतिः समानः च यतिः समानः,

ततोऽस्पृश्यत्वं कथमत्र लोके।।[11]

समाज में फैली अस्पृश्यता रूपी बुराई को देखकर कवि श्रीकृष्ण सेमवाल का हृदय अत्यन्त दुःखी है। वे चाहते हैं कि समस्त मानव मात्र को समान रूप से मानने वाले भीमराव की चिन्तनधारा संसार में प्राणिमात्र के सुख के लिए बहती रहे।

दलितजनहिताय सर्वसौख्यं विहाय,

विकटपथविशेषस्स्वीकृतो येन भव्यः।

सकलजन समानस्चिन्तनस्यास्यधारा,

प्रवहतु भुवनेऽस्मिन् सर्वदैव सुखाय।।[12]

भीमशतकम् के कवि का हृदय इस बात से अत्यन्त दुःखी है कि हमारे समाज में आज भी वर्ग संघर्ष एवं अस्पृश्यता जैसी बुराइयॉ विद्यमान हैं–

हा हन्त सीदति मनो नितरां मदीयं,

सम्वीक्ष्य वर्गरहितस्य समाजकर्त्तुः।

वर्षेऽधुना सुविमले सकले शताब्द्याः

संघर्ष वर्गपरकः परिवीक्ष्यतेऽत्र ।। [13]

कविरत्न श्रीकृष्ण सेमवाल धर्मसम्मत वर्गविहीन समाज की स्थापना के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि समाज के दीन–हीन एवं दलित जनों के लिए समस्त संसार में त्यागभावना से युक्त जो मार्ग भीमराव ने दिखाया वह मार्ग समस्त संसार में विशेषोत्कर्ष से रहे–

अयि सदय हृदय मित्र ? श्रूयतां मे वचांसि,

सकल भुवनमध्ये यस्तुमार्गस्त्वयात्र।

व्यथितजनहिताय दर्शितस्त्यागतो वै,

स भवतु विजयी मे प्रार्थनैषा पवित्रा ।। [14]

इस प्रकार कवि रत्न श्रीकृष्ण सेमवाल ने अपने खण्डकाव्य भीमशतकम् में भारतीय संविधान के निर्माता एवं महान राजनीतिज्ञ डॉ0 भीमराव अम्बेडकर द्वारा दलित समाज के लोगों के उत्थान के लिए किए गए प्रयासों का वर्णन किया है। समस्त विश्व के दलितों के प्रेरणास्रोत डॉ0 भीमराव अम्बेडकर मानव मात्र के कल्याण की भावना से अभिभूत होकर भारत में एक ऐसे वर्गहीन समाज की संरचना चाहते थे जिसमें जातिवाद वर्गवाद एवं छोटे–बड़े का प्रश्न ही न हो और प्रत्येक मनुष्य एक सम्मानपूर्ण जीवन जीता हुआ सुखी रह सके। इस कार्य के लिए वे आजीवन संघर्षरत रहे। आज जो जागृति हम दलित समाज में देख रहे हैं यह उनके संघर्ष व मार्गदर्शन का ही परिणाम है।

"भीमशतकम्" खण्ड काव्य समग्र मानव जाति की समानता का समर्थन करने वाला काव्य है। यह काव्य "वसुधैव–कुटुम्बकम्" की भावना का समर्थन करते हुए इस बात पर बल देता है कि समाज के सभी मनुष्य एक समान हैं। कोई न बड़ा है न छोटा क्योंकि सभी मनुष्य एक ही ईश्वर ने बनाए हैं।

भारत की राजनीति में जाति–पाति और अछूतपन का सवाल एक राजनीतिक रूप में प्रस्तुत करने का महत्त्वपूर्ण कार्य डॉ0 भीमराव अम्बेडकर द्वारा ही किया गया। अछूत समाज की सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने 20 जुलाई 1924 को "बहिष्कृत हितकारिणी सभा" की स्थापना की यह उनके सामाजिक जीवन की पहली संस्था थी।

कवि ने "भीमशतकम्" में लिखा है–

बहिष्कृताख्याहितकारिणी सभा

विकासिता तेन जगद्हिताय।

यस्याः प्रभावेण च शासकोऽपि

चिन्तापरोऽभूद्झटतीव तत्र।।[15]

इस संस्था का उद्देश्य बहिष्कृतों की उन्नति के लिए सबसे पहले उनमें जागृति उत्पन्न करना था। इस प्रकार बहिष्कृत हितकारिणी सभा द्वारा दलितों में व्यापक सामाजिक चेतना जागृत करने का सफल प्रयास किया गया। सन् 1924 से 1929 तक डॉ0 अम्बेडकर ने सामाजिक शैक्षणिक और धार्मिक क्षेत्र में अछूत समाज में जागृति पैदा करने के लिए और उनकी उन्नति के लिए आन्दोलन किया। डॉ0 अम्बेडकर ने "बहिष्कृत हितकारिणी सभा" की ओर से सन् 1928 में साइमन कमीशन को दलितों के राजनीतिक अधिकारों का मांग पत्र सादर प्रस्तुत किया था। इसमें दलितों को संयुक्त मताधिकार संघ और इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण राजनीतिक आरक्षण की मांग की गई थी। और इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण राजनीतिक मांग यह थी कि सार्वत्रिक चुनाव के द्वारा प्रतिनिधि चुने जाए इस सार्वत्रिक मताधिकार की मांग

के पीछे उनका एक ही उद्देश्य था कि दलित समाज जो सदियों से राजनीतिक जीवन से बहिष्कृत था उसकी राजनीतिक शिक्षा होनी चाहिए। डॉ0 अम्बेडकर का मानना था कि किसी भी समाज की स्वतंत्रता का आधार उनकी राजनीतिक चेतना पर ही निर्भर करता है। इसलिए वे दलित समाज को राजनीतिक चेतना से दूर नहीं रखना चाहते थे।

समाज के पारस्परिक समन्वय और सौहार्द के दृष्टिकोण से "भीमशतकम्" का विचार वैभव निःसंदेह ग्राह्य है। इसमें समाज का पारस्परिक सामन्जस्य समुस्थापित किया गया है वह वस्तुतः अवलोकनीय है। अनेक संकीर्ण विचारों एवं छोटे–मोटे विवादों को परित्याज्य मानते हुए सम्पूर्ण समाज एवं राष्ट्र को सुदृढ़ सूत्र में पिरोने की जो शिक्षा इस काव्य में दी गई है वह वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र के लिए अवश्यमेव उपयोगी है। कवि ने "भीमशतकम्" में डॉ0 अम्बेडकर द्वारा समाज को एक सूत्र में ग्रथित करने के जिन प्रयासों का वर्णन किया है वे नितान्त प्रेरणादायी हैं।

संदर्भ सूची :–

1. भीमशतकम् श्लोक सं0 23।
2. भीमशतकम् श्लोक सं0 24।
3. भीमशतकम् श्लोक सं0 25।
4. भीमशतकम् श्लोक सं0 63।
5. भीमशतकम् श्लोक सं0 55।
6. भीमशतकम् श्लोक सं0 81।
7. भीमशतकम् श्लोक सं0 83।
8. भीमशतकम् श्लोक सं0 45।
9. भीमशतकम् श्लोक सं0 71।
10. भीमशतकम् श्लोक सं0 66।
11. भीमशतकम् श्लोक सं0 29।
12. भीमशतकम् श्लोक सं0 95।
13. भीमशतकम् श्लोक सं0 93।
14. भीमशतकम् श्लोक सं0 97।
15. भीमशतकम् श्लोक सं0 72।

****